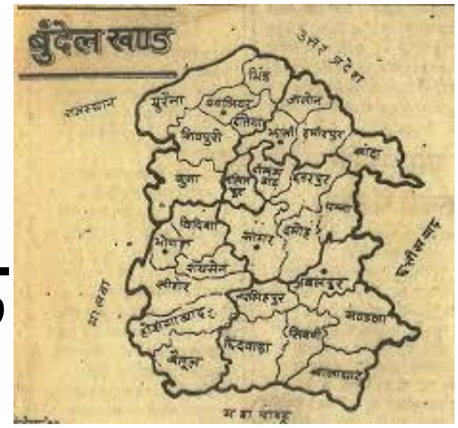
अरविन्द कुमार त्रिपाठी
द्वारा

पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन





अकाल, सूखा – कारण व समाधान
Drought, Femine- Causes & solution

Puratan BANDA, Bundelkhand ka Sankshipt Varnan

Arvind Kumar Tripathi

ISBN : 978-93-5906-820-6

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

अकाल, सूखा – कारण व समाधान **Drought, Femine- Causes & solution**

अध्याय शीर्षक	अकाल, सूखा – कारण व समाधान
सर्वाधिकार	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
आइ एस बी एन / ISBN	978-93-5906-820-6
प्रकाशक	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक ग्राम – अछरौन्ड, बान्दा – 210 001 उत्तर प्रदेश
मूल्य	निःशुल्क, पुस्तक मित्र को देना
सन्स्करण	प्रथम, 01 अप्रैल 2020
आवरण / मुखपृष्ठ	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
शब्द – संयोजन	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
मुद्रक	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
सन्दर्भ / साभार / सौजन्य	अध्याय Reference देखे

Chapter Heading	**Drought, Femine- Causes & solution**
Copyright @	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
ISBN	**978-93-5906-820-6**
Publisher	**Arvind Kumar Tripathi** **Village - Achharaund** **Banda - 210 001** **Uttar Pradesh**
Price	**Free, Circulate to Friends**
Edition	**First, 01 April 2020**
Cover Main	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Word Compositor	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Printer	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Reference/ Gratitude/ courtesy	**Peruse Chapter - REFERENCE**

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

अकाल, सूखा – कारण व समाधान **Drought, Femine- Causes & solution**

पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड – अकाल सूखा – कारण व समाधान का संक्षिप्त वर्णन

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

अकाल का इतिहास

मध्य भारत का एक अर्ध–शुष्क क्षेत्र, बुन्देलखण्ड क्षेत्र व बान्दा, लगातार अकाल और अनावृष्टि से भरा इतिहास रहा है। अपनी शुष्क जलवायु और मानसूनी वर्षा पर निर्भरता के कारण यह क्षेत्र इन घटनाओं के प्रति विशेष रूप से सन्वेदनशील रहा है। एक उल्लेखनीय अकाल, 1896–1897 का भारतीय अकाल, बुन्देलखण्ड क्षेत्र व बान्दा में उत्पन्न हुआ और देश के अन्य भागों में फैल गया। इस क्षेत्र का इतिहास खाद्यान्न की कमी के प्रति इसकी सन्वेदनशीलता और इन घटनाओं से निपटने में इसके निवासियों के सामने आने वाली चुनौतियों को दर्शाता है।

सन्वेदनशीलता–

बुन्देलखण्ड क्षेत्र व बान्दा एक अर्ध–शुष्क क्षेत्र है जिसकी जलवायु इसे सूखे और अकाल के प्रति सन्वेदनशील बनाती है।

बार–बार पड़ने वाले अकाल–

इस क्षेत्र ने इतिहास में कई अकालों का अनुभव किया है, जो वर्षा पर इसकी निर्भरता और खाद्य सुरक्षा प्रबन्धन की चुनौतियों को दर्शाता है।

बुन्देलखण्ड क्षेत्र व बान्दा में अकाल के इतिहास के मुख्य बिन्दु–

1869 राजपुताना अकाल–

इस अकाल को महान राजपूताना अकाल के नाम से भी जाना जाता है, जिसने बुन्देलखण्ड क्षेत्र व बान्दा सहित एक विशाल क्षेत्र को प्रभावित किया था।

1896–1897 भारतीय अकाल–

बुन्देलखण्ड क्षेत्र व बान्दा में उत्पन्न इस अकाल ने व्यापक कठिनाई पैदा की और विकिपीडिया के अनुसार, सन्युक्त प्रान्त, मध्य प्रान्त और बरार सहित भारत के एक बड़े हिस्से को प्रभावित किया।

यह अकाल बुन्देलखण्ड (आगरा प्रान्त) में शुरू हुआ और सन्युक्त प्रान्त, मध्य प्रान्त और बरार सहित भारत के अन्य हिस्सों में फैल गया।

2003–2007 सूखा–

इस सूखे ने बुन्देलखण्ड क्षेत्र व बान्दा में "पोषण आपातकाल" पैदा कर दिया।

2015–2016 सूखा–

इस सूखे के साथ–साथ 2015 में बेमौसम बारिश के कारण फसलें बर्बाद हो गईं, पशुधन की हानि हुई और सन्कटपूर्ण पलायन हुआ।

2015 सर्वेक्षण–

एक सर्वेक्षण से पता चला है कि बुन्देलखण्ड क्षेत्र व बान्दा सूखे और प्रतिकूल मौसम के कारण अकाल जैसी स्थिति का सामना कर रहा था।

हाल की प्रवृत्ति–

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

बुन्देलखण्ड क्षेत्र व बान्दा में लगातार और तीव्र सूखा पड़ा है, तथा कुछ वर्षों में वर्षा की कमी भी देखी गई है।

उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी में भारत में अकाल के कारण लाखों लोग मारे गए; हालांकि, सूखे के साथ ऐतिहासिक अकालों का संबन्ध जटिल है और अच्छी तरह से समझा नहीं गया है।

स्टेशन–आधारित टिप्पणियों और सिमुलेशन का उपयोग करते हुए, 1870–2016 की अवधि के लिए भारत में मिट्टी की नमी (कृषि) सूखे का पुनर्निर्माण करने पर पता चला कि इस डेढ़ सदी की अवधि में, भारत ने सात प्रमुख सूखे की अवधि (1876–1882, 1895–1900, 1908–1924, 1937–1945, 1982–1990, 1997–2004, और 2011–2015) का अनुभव किया, जो मिट्टी की नमी की गम्भीरता–क्षेत्र–अवधि विश्लेषण पर आधारित था। 1870–2016 के दौरान हुए छह प्रमुख अकालों (1873–74, 1876, 1877, 1896–97, 1899 और 1943) में से पांच मिट्टी की नमी वाले सूखे से जुड़े हैं, और एक (1943) नहीं था। तीन सबसे घातक सूखे (1877, 1896 और 1899) को अल नीनो–दक्षिणी दोलन के सकारात्मक चरण से जोड़ा गया था। पांच प्रमुख सूखे अकाल से जुड़े नहीं थे, और उन पांच गैर–अकाल सूखे में से तीन 1947 में भारतीय स्वतंत्रता के बाद हुए।

भारत में 1870–2016 के दौरान सूखे की प्रमुख घटनाओं का पुनर्निर्माण किया गया है।
भारत ने सात प्रमुख सूखे की अवधियों (1876–1882, 1895–1900, 1908–1924, 1937–1945, 1982–1990, 1997–2004, और 2011–2015) का अनुभव किया है।

1870–2016 के दौरान आए छह प्रमुख अकालों में से पाँच मृदा नमी के सूखे से जुड़े थे, और एक (1943) भारत में नहीं था।

विश्लेषण से पता चला है कि 1876–1882, 1895–1900, 1908–1924, 1937–1945, 1982–1990, 1997–2004 और 2011–2015 मृदा नमी सूखे की प्रमुख अवधियाँ हैं।

1967 में, उत्तर प्रदेश के बान्दा में, इस क्षेत्र में एक बड़े सूखे के हिस्से के रूप में, विशेष रूप से 1966–1967 के बिहार सूखे के दौरान, अकाल पड़ा था। इस सूखे के कारण फसलें बुरी तरह बर्बाद हुईं और व्यापक भुखमरी हुई।

बुन्देलखण्ड क्षेत्र व बान्दा क्षेत्र में बार–बार पड़ने वाला सूखा कई तरह की कठिनाइयाँ लेकर आता है क्योंकि बुन्देलखण्ड क्षेत्र व बान्दा क्षेत्र में फसल उत्पादन, पशुपालन और मौसमी पलायन ग्रामीण आय का 90प्रतिशत से अधिक हिस्सा प्रदान करते हैं (समरा 2008)।

इस क्षेत्र में

30 वर्ष (पिछले 50 में से) ऐसे रहे हैं जब वर्षा सामान्य से कम रही, तथा

15 वर्ष ऐसे रहे हैं जब वर्षा सामान्य से 25प्रतिशत से अधिक कम रही (मूर्ति एट अल. 2013, जैन एट अल. 2014)।

सूखे के कारण फसल की विफलता से फसल अवशेषों की उपलब्धता सीमित हो जाती है, जिससे किसानों के लिए पशुधन का पालन–पोषण सबसे कठिन हो जाता है।

अकाल का प्रभाव–

इस अकाल के कारण विशेष रूप से बुन्देलखण्ड क्षेत्र व बान्दा और अन्य प्रभावित क्षेत्रों में गम्भीर खाद्यान्न की कमी, विस्थापन और जान–माल का भारी नुकसान हुआ।

बुन्देलखण्ड क्षेत्र व बान्दा में सूखे और अकाल का इतिहास रहा है, विशेष रूप से 18वीं और 19वीं शताब्दी में, जो प्रायः हर 16 वर्ष में होता था। इस क्षेत्र ने 1869 के राजपूताना अकाल और 1896–1897 के भारतीय अकाल के दौरान गम्भीर अकाल का अनुभव किया । हाल ही में, बुन्देलखण्ड क्षेत्र व बान्दा बार–बार पड़ने वाले सूखे से जूझ रहा है, जिसके कारण 2003–2007 के सूखे के दौरान ''पोषण आपातकाल'' की स्थिति उत्पन्न हो गई थी।

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

बुन्देलखण्ड क्षेत्र व बान्दा ने सूखे के कारण भूख से हुई मौतों, किसानों की आत्महत्या और जल सन्कट को लेकर कई राजनीतिक झड़पें देखी हैं। बुन्देलखण्ड क्षेत्र व बान्दा क्षेत्र में उत्तर प्रदेश के सात जिलों में से एक, बान्दा, 2016 में सूखे की मार झेलने वाले सबसे बुरी तरह प्रभावित जिलों में से एक था।

संयुक्त प्रगतिशील गठबन्धन (संप्रग) ने 2009 में बुन्देलखण्ड क्षेत्र व बान्दा के लिए सूखा राहत और एकीकृत विकास के रूप में 7,266 करोड़ रुपये के पैकेज को मन्जूरी दी थी। इस पैकेज में कुओं और कृषि तालाबों की खुदाई की परिकल्पना की गई थी। राज्य में तत्कालीन सत्ताधारी बहुजन समाज पार्टी (बसपा) ने राहत के लिए भेजी गई राशि को लेकर केन्द्र के साथ वाक्‌युद्ध किया।

2016 के सूखे के दौरान, जब बान्दा से भूख से मौतें हुईं, तो केन्द्र सरकार ने सन्कट को कम करने के लिए पानी की ट्रेन भेजने की पेशकश की। इस प्रस्ताव को उत्तर प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमन्त्री अखिलेश यादव ने ठुकरा दिया था।

इसके बजाय, उन्होंने प्रधानमन्त्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात की और पानी की कमी से जूझ रहे गाँवों में पानी पहुँचाने के लिए 10,000 टैंकर खरीदने हेतु 11,000 करोड़ रुपये के सहायता पैकेज की माँग की। यह धनराशि अन्य मदों पर भी खर्च की जानी थी।

केन्द्र ने राज्य से सूखाग्रस्त क्षेत्र के लिए दीर्घकालिक समाधान तलाशने को कहा था। हाल ही में, योगी आदित्यनाथ सरकार(2023ई0) ने क्षेत्र में पानी की तत्काल उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए 47 करोड़ रुपये के पैकेज को मन्जूरी दी।

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

सन्दर्भ / सौजन्य

जर्नल ऑफ हाड्रोलोजी इन्जीरियरिन्ग ए एससी इ जुलाइ 2014 पेज 1371

अकाल, सूखा – कारण व समाधान Drought, Femine- Causes & solution